

(नारदपुराणोक्त) श्रीमारुतिकवच*

सनत्कुमार उवाच

कार्तवीर्यस्य कवचं कथितं ते मुनीश्वर ।
मोहविध्वंसनं जैत्रं मारुतेः कवचं शृणु ॥ १ ॥

सनत्कुमारजीने कहा—मुनीश्वर ! मैंने तुमसे कार्तवीर्य-
कवचका वर्णन किया । अब मोहनाशक और विजयप्रद
मारुति-कवचका वर्णन सुनो ॥ १ ॥

यस्य संधारणात् सद्यः सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ।
भूतप्रेतारिजं दुःखं नाशमेति न संशयः ॥ २ ॥

जिसके धारण करनेसे सभी उपद्रव तत्काल नष्ट हो जाते
हैं तथा भूत, प्रेत एवं शत्रुसे उत्पन्न दुःखका भी नाश हो
जाता है, इसमें संशय नहीं है ॥ २ ॥

यः विनाशक एवास्ति सन्तानं च तदा नृपः ॥ ३ ॥

एकदाहं गतां ब्रह्म रामं रमानाथं वरम् ।
आनन्दवनिकासंस्थं ध्यायन्तं स्वात्मनः पदम् ॥ ३ ॥

एक समयकी बात है, मैं मनको रमानेवालोंमें श्रेष्ठ भगवान् श्रीरामका दर्शन करनेके लिये अयोध्या गया हुआ था । वे आनन्दवनमें बैठकर अपने ही स्वरूपका ध्यान कर रहे थे ॥ ३ ॥

तत्र रामं रमानाथं पूजितं त्रिदशेश्वरैः ।
नमस्कृत्य तदादिष्टमासनं स्थितवान् पुरः ॥ ४ ॥

वहाँ पहुँचकर देवेश्वरोंसे पूजित रमानाथ श्रीरामको नमस्कार करके उन्हींके आदेशसे उनके सामने ही एक आसनपर बैठ गया ॥ ४ ॥

तत्र सर्वं मया वृत्तं रावणस्य वधान्तकम् ।
पृष्टं प्रोवाच राजेन्द्रः श्रीरामः स्वयमादरात् ॥ ५ ॥

'उस जगह मैंने उनसे आरम्भसे लेकर रावण-वधतकका वृत्तान्त पूछा । तब राजाधिराज श्रीरामने बड़े आदरके साथ स्वयं वह सारी कथा कह सुनायी ।

ततः कथान्तं भगवान् मारुतः कवचं ददौ ।

मह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि न प्रकाश्यं हि कुत्रचित् ॥ ६ ॥

तत्पश्चात् कथाके अन्तमें भगवान्ने मुझे मारुति-कवच प्रदान किया, जिसका मैं तुम्हारे समक्ष वर्णन करूँगा । तुम इसे कहीं भी प्रकट न करना ॥ ६ ॥

भविष्यदेतन्निर्दिष्टं बालभावेन नारद ।

श्रीरामेणाञ्जनासुनोर्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ७ ॥

नारद ! श्रीरामने बालभावसे भविष्यमें होनेवाला यह सब वृत्तान्त बताया और अञ्जनीनन्दन हनुमानका कवच भी कह सुनाया, जो भोग और मोक्ष देनेवाला है ॥ ७ ॥

कवचं

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।

पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः ॥ ८ ॥

पूर्व दिशामें हनुमान रक्षा करें, दक्षिण दिशामें पवन-पुत्र रक्षा करें । पश्चिम दिशामें रावणपुत्र अक्षकुमारके विनाशक रक्षा करें तथा उत्तर दिशामें सागरतारक (समद-

को तैर जानवाल) रक्षा करें ॥ ८ ॥

ऊर्ध्व पातु कपिश्रेष्ठः केसरिप्रियनन्दनः ।

अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः ॥ ९ ॥

ऊर्ध्व दिशामें केसरीके प्रिय पुत्र कपिश्रेष्ठ रक्षा करें ।
अधोभागमें विष्णुभक्त रक्षा करें तथा दिशाओंके मध्यभागमें
पावनि (पवन-पुत्र) रक्षा करें ॥ ९ ॥

लङ्काविदाहकः पातु सर्वापङ्गव्यो निरन्तरम् ।

सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ॥ १० ॥

भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ।

नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ॥ ११ ॥

लंका जलानेवाले हनुमानजी सम्पूर्ण विपत्तियोंसे निरन्तर
हमारा संरक्षण करें । सुग्रीवके मन्त्री मस्तककी रक्षा
करें । वायुनन्दन हनुमान भालदेशकी रक्षा करें । महावीर
दाना भौहोंके मध्यभागमें निरन्तर रक्षा करें । छायाग्राहिणी
राक्षसीका अपहरण करनेवाले तथा वानरोंके स्वामी हनुमानजी
हमारे दोनों नेत्रोंकी रक्षा करें ॥ १०-११ ॥

कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः ।

नासाग्रमञ्जनासूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः ॥ १२ ॥

श्रीरामके सेवक दोनों कपोलों तथा कानोंके मूलभागोंकी
रक्षा करें, अञ्जनाके पुत्र नासिकाके अग्रभागकी तथा बंदरोंके
स्वामी मुखकी रक्षा करें ॥ १२ ॥ (२)

पातु कण्ठं तु दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरारिजित् ।

भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः ॥ १३ ॥

दैत्योंके शत्रु कण्ठकी रक्षा करें, देवशत्रुओंको जीतनेवाले
दोनों कंधोंकी रक्षा करें । महातेजस्वी दोनों भुजाओं और
चरणरूपी शस्त्रवाले दोनों हाथोंकी रक्षा करें ॥ १३ ॥ (६)

नखान् नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः ।

वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ॥ १४ ॥

नखरूपी शस्त्रवाले नखोंकी रक्षा करें, कपियोंके स्वामी
कुक्षिभागकी रक्षा करें । अँगूठी ले जानेवाले वक्षःस्थलकी
तथा भुजारूपी आयुधवाले दोनों पार्श्वभागोंकी रक्षा
करें ॥ १४ ॥ (७)

लङ्कानिभजनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ।

नाभिं श्रीरामभक्तस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः ॥ १५ ॥

लंकाको भूज देनेवाले पृष्ठ (पीठ) भागकी निरन्तर रक्षा करें । श्रीरामभक्त नाभिकी और अनिल (पवन) पुत्र कमरकी रक्षा करें ॥ १५ ॥ (२)

गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी अतिथिप्रियः ।

ऊरु च जानुनी पातु लङ्काप्रासाद्रभञ्जनः ॥ १६ ॥

महाप्राज्ञ गुह्यभागकी तथा अतिथिप्रिय जाँघोंकी रक्षा करें । लंकाके महलोंको नष्ट करनेवाले दोनों ऊरुओं तथा घुटनोंकी रक्षा करें ॥ १६ ॥ (३)

जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः ।

अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसंनिभः ॥ १७ ॥

कपिश्रेष्ठ दोनों पिण्डलियोंकी रक्षा करें । महाबलवान् दोनों गुल्फों (टखनों) की रक्षा करें । पर्वतको उठानेवाले एवं सूर्यके समान तेजस्वी हनुमानजी दोनों चरणोंकी रक्षा करें ॥ १७ ॥

मङ्गानि पातु सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा । (१०)

मुखाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥ १८ ॥

अत्यन्त बलशाली हनुमानजी अङ्गों तथा पैरकी अङ्गुलियोंकी सदा रक्षा करें । महाशूर मुख आदि अङ्गोंकी तथा मनको वशमें रखनेवाले रोमावलियोंकी रक्षा करें ॥ १८ ॥

दिवारात्रौ त्रिलोक्येषु सदा गतिसुतोऽवतु । (११)

स्थितं व्रजन्तमासीनं पियन्तं जक्षतं कपिः ॥ १९ ॥

वायुपुत्र कपिश्रेष्ठ हनुमानजी दिन-रात तीनों लोकोंमें खड़े, चलते, बैठे, पीते और खाते समय मेरी रक्षा करें ॥ १९ ॥ (१२)

लोकोत्तरगुणः श्रीमान् पातु त्र्यम्बकसम्भवः ।

प्रमत्तमप्रमत्तं वा शयनं गहनेऽम्बुनि ॥ २० ॥

मैं सावधान होऊँ या असावधान, अथवा गहरे जलमें ही क्यों न सोया होऊँ, सब जगह लोकोत्तर गुणशाली शिव-पुत्र श्रीमान् हनुमान मेरी रक्षा करें ॥ २० ॥ (१३)

स्थलेऽन्तरिक्षे ह्यग्नौ वा पर्वत सागर दुर्म

संग्रामे संकटे घोरे विराड्रूपधरोऽवतु ॥ २१ ॥

स्थलों, आकाशमें, अग्निमें, पर्वतपर, समुद्रमें, वृक्षपर, युद्धमें अथवा घोर संकटके समय विराटरूपधारी हनुमानजी मेरी रक्षा करें ॥ २१ ॥ (१४)

डाकिनीशाकिनीमारीकालरात्रिमरीचिकाः ।

शयानं मां विभुः पातु पिशाचोरगराक्षसीः ॥ २२ ॥

सोते समय मेरे प्रभु हनुमानजी डाकिनी, शाकिनी, मारी, कालरात्रि, मरीचिका, पिशाच, नाग तथा राक्षसियोंको भगाकर मेरी रक्षा करें ॥ २२ ॥ (१५)

दिव्यदेहधरो धीमान् सर्वसत्त्वभयंकरः ।

साधकेन्द्रावनः शश्वत्पातु सर्वत एव माम् ॥ २३ ॥

सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये भयंकर तथा श्रेष्ठ साधकोंके रक्षक दिव्यदेहधारी बुद्धिमान् हनुमानजी सदा सब ओरसे मेरी रक्षा करें ॥ २३ ॥ (१६)

यद्रूपं भीषणं दृष्ट्वा पलायन्ते भयानकाः ।

स सर्वरूपः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिकरोऽवतु ॥ २४ ॥

जिनके भीषण रूपको देखकर भयानक जन्तु भी भाग खड़े होते हैं, वे सृष्टि, पालन (और संहार) करनेवाले सर्व-स्वरूप एवं सर्वज्ञ हनुमान मेरी रक्षा करें ॥ २४ ॥ (१७)

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः ।

सूर्यमण्डलगः धीदः पातु कालत्रयंऽपि माम् ॥ २५ ॥

जो स्वयं ब्रह्मा, स्वयं विष्णु और स्वयं साक्षात् महेश्वर देव हैं, वे सूर्यमण्डलतक पहुँचनेवाले लक्ष्मीदाता हनुमान तीनों कालोंमें मेरी रक्षा करें ॥ २५ ॥ (१८)

यस्य शब्दमुपाकर्ण्य दैत्यदानवराक्षसाः ।

देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥ २६ ॥

सभया भयनिर्मुक्ता भवन्ति स्वकृतानुगाः ।

यस्यानेककथाः पुण्याः श्रूयन्ते प्रतिकल्पके ॥ २७ ॥

सोऽवतात् साधकश्रेष्ठं सदा रामपरायणः ।

जिनके शब्दकी सुनकर दैत्य, दानव तथा राक्षस भयभीत

हो जाते हैं और देवता, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि स्थावर-जङ्गम प्राणी भयसे छूटकर अपने-अपने कर्मोंमें लग जाते हैं तथा प्रत्येक कल्पमें जिनकी अनेक पुण्य-कथाएँ सुनी जाती हैं, वे श्रीरामभक्त हनुमान श्रेष्ठ पाधककी सदा रक्षा करें ॥ २६-२७^१ ॥

वैधात्रधातुप्रभृति यत्किञ्चिद्दृश्यतेऽत्यलम् ॥ २८ ॥
विद्धि व्याप्तं यथा कीशरूपेणाननेन तत् ।

नारद ! ब्रह्मा और ब्रह्माकी सृष्टि आदि जो कुछ भी सम्पूर्ण जगत् दृष्टिगोचर होता है, उस सबको निरञ्जन (निर्मल) वानर हनुमानरूपसे व्याप्त समझो ॥ २८^१ ॥₂₉

यो विभुः सोऽहमेषोऽहं स्वीयः स्रग्विमणुर्बृहत् ॥ २९ ॥

ऋग्यजुःसामरूपश्च प्रणवस्त्रिवृदध्वरः ।
तस्मै स्वस्मै च सर्वस्मै नतोऽस्म्यात्मसमाधिना ॥ ३० ॥

जो सर्वव्यापी परमात्मा हैं, वह मैं हूँ । यह मैं, मेरा अपना, मैं स्वयं, अणु, महान् ऋग्वेद, यजुर्वेद और साम-वेद सब हनुमानजीके ही रूप हैं । प्रणव तथा त्रिवृत् यज्ञ भी वे ही हैं । वे 'स्व'रूप तथा 'सर्व'रूप हैं । मैं अपने चित्तको एकाग्र करके उनको नमस्कार करता हूँ ॥ २९-३० ॥₂₂

अनेकानन्तब्रह्माण्डधृते ब्रह्मस्वरूपिणे ।
समीरणात्मने तस्मै नतोऽस्म्यात्मस्वरूपिणे ॥ ३१ ॥₂₃

जो अनेकानेके अनन्त ब्रह्माण्डको धारण करते हैं तथा जो ब्रह्मस्वरूप, वायुरूप और आत्मस्वरूप हैं, उन हनुमानजीको मैं नमन करता हूँ ॥ ३१ ॥₂₄

नमो हनुमते तस्मै नमो माखतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामाय महते नमः ॥ ३२ ॥

उन हनुमानजीको नमस्कार है, वायुपुत्रको नमस्कार है, श्रीरामभक्तको नमस्कार है तथा महान् श्यामस्वरूपको नमस्कार है ॥ ३२ ॥₂₅

नमो धानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे ।
लङ्काविदहनायाथ महासागरतारिणे ॥ ३३ ॥

जो मणिधारी श्रीरामके साथ मैत्री करनेवाले, लंका-

पुरीको दग्ध करनेवाले तथा महासागरको लॉघ जानेवाले हैं,
उन वानरवीरको नमस्कार है ॥ ३३ ॥

२६

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च ।
रावणान्तनिदानाय नमः सर्वोत्तरात्मने ॥ ३४ ॥

जो सीताजीके शोकका विनाश करनेवाले, श्रीरामकी दी
हुई मुद्रिकाको धारण करनेवाले तथा रावणके विनाशके आदि-
कारण हैं, उन सर्वोत्तरात्मा (लोकोत्तर वीर) हनुमानजीको
नमस्कार है ॥ ३४ ॥

(३५)

मेघनादमखध्वंसकारणाय नमो नमः ।
अशोकवनविध्वंसकारिणे जयदायिने ॥ ३५ ॥

मेघनादके यशका विध्वंस करनेवाले, अशोकवाटिकाको
नष्ट-भ्रष्ट कर देनेवाले तथा विजयप्रदाता हनुमानजीको
बारंबार नमस्कार है ॥ ३५ ॥

(३८)

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने ।
वनपालशिरश्छेत्रे लङ्काप्रासादभञ्जिने ॥ ३६ ॥
ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥ ३७ ॥

जो आकाशके भीतर चलनेवाले, (अशोक) वनरक्षकोंके
मस्तकका छेदन और लंकाके महलोंका भञ्जन करनेवाले,
तपाये हुए सुवर्णके समान कान्तिमान्, लंबी
लाङ्गल धारण करनेवाले तथा सुमित्राकुमारको विजय
दिलानेवाले हैं, उन वीरवर वायुपुत्र श्रीरामदूतको
नमस्कार है ॥ ३६-३७ ॥

३ ✓ ४०

अश्वस्य वधकर्त्रं च ब्रह्मशस्त्रनिवारिणे ।
लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिजातशतविनाशिने ॥ ३८ ॥
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः ।
ऋक्षवानरवीरौघप्रसादाय नमो नमः ॥ ३९ ॥

जो रावणकुमार अश्वका वध करनेवाले, मेघनादके
ब्रह्मास्त्रका निवारण कर देनेवाले, लक्ष्मणके शरीरमें
महाशक्तिजनित घावका विनाश करनेवाले, राक्षसों-
के हन्ता, शत्रुओंके नाशक और भूतोंके विधातक

तथा रीछों और धानर वीरोंके समुदायको प्रसन्न करनेवाले हैं, उन पवननन्दनको बारंबार नमस्कार है ॥ ३८-३९ ॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।

विषघ्नाय द्विषघ्नाय भयघ्नाय नमो नमः ॥ ४० ॥

शत्रु-सैन्य-बलके नाशक और शस्त्र तथा अस्त्रोंके विनाशक आपको नमस्कार है । विष-नाशक, शत्रु-नाशक और भय-नाशक आपको बारंबार नमस्कार है ॥ ४० ॥ ४३

महारिपुभयघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे ।

परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥ ४१ ॥

पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः ।

बालार्कमण्डलग्रासकारिणे दुःखहारिणे ॥ ४२ ॥

आप बड़े-बड़े शत्रुओंके भयको मिटानेवाले तथा भक्तोंके एकमात्र रक्षक हैं । शत्रुओंद्वारा प्रयुक्त यन्त्र-मन्त्रोंका स्तम्भन (रुकावट) करनेवाले, पानीपर पत्थरको तैरानेवाले, प्रातःकालीन बाल-सूर्यके मण्डलको अपना ग्रास बनानेवाले तथा सबके दुःख हर लेनेवाले आप हनुमानको बारंबार नमस्कार है ॥ ४१-४२ ॥ ४४ २५

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च ।

विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥ ४३ ॥

नख ही आपके-आयुध हैं । आप देखनेमें भयंकर तथा दाँतोंको भी आयुधके रूपमें धारण करते हैं । आप आकाशचारी, शिवस्वरूप तथा वज्रदेहधारी हैं । आपको नमस्कार है ॥ ४३ ॥ ३६

प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्थिने ।

क्वस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः ॥ ४४ ॥

आप प्रत्येक ग्राममें स्थित हैं, भूतों और प्रेतोंका वध करनेके लिये उद्यत रहते हैं । आपके एक हाथमें शस्त्रके रूपमें पर्वत है तथा आप श्रीरामके वाण हैं । आपको नमस्कार है ॥ ४४ ॥ ३७

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च ।

दक्षिणाशाभास्कराय सतां चन्द्रोदयात्मने ॥ ४५ ॥

कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।

वास्यज्ञापाथसंग्रामसख्यसजयकारिणे ॥ ४६ ॥

भक्तानां दिव्यवादिषु संग्रामे जयकारिणे ।

किलकिलाबुबुकाराय धोरशब्दकराय च ॥ ४७ ॥

सर्वाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे ।

सदा वनफलाहारसंतृप्ताय विशेषतः ॥ ४८ ॥

महार्णवशिलावद्धसेतुबन्धाय ते नमः ।

४०-४१

आप कौपीन वस्त्रधारी तथा श्रीरामभक्तिमें तत्पर रहनेवाले हैं । आप दक्षिण दिशाके सूर्य तथा सत्पुरुषोंके लिये चन्द्रोदयरूप हैं । आप कृत्याजनित क्षति एवं व्यथाके नाशक तथा सम्पूर्ण क्लेशोंका हरण करनेवाले हैं । स्वामीकी आज्ञासे पृथापुत्र अर्जुनको महाभारत युद्धमें सहायता देने एवं विजय दिलानेवाले हैं । आप दिव्य वादों तथा संग्राममें भक्तोंको विजय दिलानेवाले, किलकिला एवं बुबुकार करनेवाले तथा भयंकर सिंहनाद करनेवाले हैं । आप सम्पूर्ण अग्नि एवं व्याधियोंका स्तम्भन करनेवाले तथा भय हर लेनेवाले हैं । विशेषतः आप सदा वन्यफलोंके आहारसे ही पूर्णतः तृप्त रहते हैं । महासागरमें पत्थरोंका सेतु बाँधनेवाले आपको नमस्कार है ॥ ४५-४८ ॥

इत्येतत्कथितं विप्र. मारुतेः कवचं शिवम् ॥ ४९ ॥

यस्मै कसौ न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः ।

ब्रह्मन् ! यह मैंने कल्याणमय मारुतिकवचका वर्णन किया है । जिस किसीको भी इसका उपदेश नहीं देना चाहिये । प्रयत्नपूर्वक इसकी रक्षा करनी चाहिये ॥ ४९ ॥

अष्टगन्धैर्विलिख्याथ कवचं धारयेत्तु यः ॥ ५० ॥

कण्ठे वा दक्षिणे वाहौ जयस्तस्य पदे पदे ।

जो इस कवचको अष्टगन्धसे लिखकर कण्ठ अथवा दाहिनी बाँहमें धारण करता है, उसे पद-पदपर विजय प्राप्त होती है ॥ ५० ॥

किं पुनर्बहुनोक्तेन साधितलक्षमादरात् ॥ ५१ ॥

प्रजप्तमेतत्कवचमसाध्यं चापि साधयेत् ॥ ५२ ॥

बहुत कहनेसे क्या लाभ । यदि आदरपूर्वक लाख बार
पाठ करके इसको सिद्ध कर लिया जाय तो इस कवचका
जप असाध्य कार्यको भी सिद्ध कर सकता है ॥ ५१-५२ ॥

इति मारुति-कवच-निरूपणं नामाष्टमोऽध्यायः ॥

पादमे मारुति-कवच-निरूपणका अष्टमोऽध्याय समाप्त हुआ ।

रस्त कर दिये परन्तु इस पत्र की प्रतिया न तो
तथा न उष कौषागार ज्ञानपुर देहात को प्रेषित
है ।

मश्र दिनांक 19. 10. 95 से अवकाश पर है अतः
ही कराया जा सकताथा । मात्र श्री शिवराम
नृपालन में प्रधानाचार्य कार्यालय ने प्रधानाचार्य
है ।

जी को प्रधानाचार्य के रूप में प्रमाणित इस्ताधर
प्राप्त नहीं हुये तथा श्री मिश्रा जी ने
उच्च न्यायालय इलाहाबाद के याचिका नं०
मिश्रा बनाम उष शिक्षा निदेशक ज्ञानपुर मण्डल

.....2/



This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786

Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript. Also included are antique paintings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernalia

Collectors and Art/Literature Lovers can contact him if they wish through his facebook page

Scanning and uploading by eGangotri Digital Preservation Trust and Sarayu Trust Foundation.